Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

महाकवि सूरदास की कृतियों में समाहित संगीत

NISHA PATHAK[1] & DR. (SMT.) AMITA SHARMA[2]

[1]Research Scholar, Dr. Bhimrao Ambedkar University, Agra, Uttar Pradesh
[2] Head & associate Professor Dept. of Music, Baikunti Devi Girls (P.G.) College, Baluganj, Agra

सार

हमारे देश में जितने भी साहित्यकार या कवि हुए हैं प्राय:सभी ने स्वर और लय सांनिध्य में शब्द की चेतना शक्ति द्वारा भावाभिव्यक्ति की है,ऐसे ही कवियों में उच्च शिखर प्राप्त करने वाले शिरोमणि महाकवि सूरदास जी विश्वविख्यात है,जिन्होंने संगीत के माध्यम से भगवान कृष्ण के भक्ति के पद गाकर हिंदी के कवियों में सर्वोच्च शिखर प्राप्त किया। सूरदास जी के पदों को लिखने के समय, संगीत उनकी रचनाओं का अहम और अभिन्न अंग था। कहने का तात्पर्य है कि सूर के पदों में संगीत का पूर्ण विधान है, इसमें ताल और लय का चमत्कार प्रमुख रूप से देखने को मिलता है सूर के पदों का गेयत्व अभूतपूर्व है शास्त्रीय राग-रागिनीयो के ठीक स्वर ताल लय उनके पदों में प्राप्त हैं तथा उनके हर एक पद में संगीत विराजमान है।

उद्देश्य:- महाकवि सूरदास की कृतियों में समाहित संगीत का ज्ञान।

मुख्य शब्द: भावाभीव्यक्ति, अद्भुत, संगीतिकरण, सूरदास, कृतियां, समाहित

परिचय

महाकवि सूरदास का जन्म 1478 ईसा पूर्व वर्तमान उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में हुआ था। वह भक्तिकालीन भारतीय संस्कृति के महान संत-कवि थे और भक्ति साहित्य के प्रमुख नायकों में से एक माने जाते है। सूरदास जी की कृतियों में भगवान श्रीकृष्ण के भक्तिभाव, भावुकता और प्रेम का प्रतिपादन किया गया है। उनकी कृतियोंका मुख्य विषय लीला, वृंदावन, रासलीला, गोपियों का प्रेम, भक्ति और विरह है।

सूरदास की रचनाएँ संगीत सहित लोकप्रिय थीं और उन्होंने संगीत और काव्य के क्षेत्र में अद्भुत काम किया था। उन्होंने संगीत के माध्यम से भक्ति भाव को एक अद्भुत रूप में प्रस्तुत किया था। सूरदास जीवन भर संगीत और भक्ति मे धारा प्रवाहित रहे थे और उनकी रचनाएँ आज भी लोकप्रिय हैं और भक्तिभावना को प्रेरित करती हैं। उनकी कृतियों में कविता के साथ-साथ गीत भी थे और इन्हें "पद" के नाम से जाना जाता है। इन पदों को आधुनिक संगीत के गीतों में भी सम्मिलित किया जा रहा है और इनके मेलोडियस और भावपूर्ण शब्दों से लोगों का मन मोह लिया करते हैं।

सूरदास के भजन और पदों का संगीत आज भी भारतीय संगीत परंपरा में एक महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है और उन्हें उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के अनुसार गाने की परंपरा आज भी जारी है।उनका संबंध भी भक्ति संगीत के अन्य रूपों से है। सूरदास जी के भजन और पदों का संगीत लोकप्रियता के साथ जनमानस में समाहित हो गया था, इसलिए उनकी रचनाएं आज भी लोगों के बीच पसंदीदा रचनाएं बनी हुई हैं।

सूरदास के भजनों और पदों को संगीत के साथ गाया जाता है, जिससे उनके शब्द और भक्तिभाव का प्रभाव और भी गहरा हो जाता है। इन पदों को ताल-संगति के साथ गाया जाता है जैसे कि ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी, तराना, भजन, कीर्तन, भव्य संगीत, लघु भजन आदि। इसके अलावा, कई संगीतज्ञ ने भजनों का आलापन और संगीतीकरण किया है ताकि उन्हें संगीत की नई दिशा मिल सके।

इस तरह, सूरदास के संगीत सहित कृतियां भारतीय संगीतीय परंपरा में महत्वपूर्ण रूप से जीवित हैं और भक्ति भावना को संगीत के माध्यम से व्यक्त करने में सहायता करती हैं। सूरदास के गीत और भजन आज भी संगीतकारों, संगीत संस्थानों और भक्ति संगठनों में गाए जाते हैं और उनकी शान्ति, प्रेम, और देवों के प्रति भक्ति भावना से जुड़े लोगों के दिलों को छू जाते हैं।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

सूरदास के पद उनका अर्थ तथा उसमें समाहित संगीत सूरदास के पद भक्ति संगीत के अद्भुत उदाहरण हैं जो भगवान श्रीकृष्ण के प्रति उनके अद्भुत प्रेम और भक्ति को व्यक्त करते हैं। उनके पदों में भगवान के लीला, वृंदावन की सुंदरता, गोपियों का प्रेम, भक्ति की महिमा और विरह की भावना को अभिव्यक्ति दी गई है।सूरदास की कृतियों में संगीत एक महत्वपूर्ण तत्व है और उन्होंने इसे अद्वितीयता के साथ अपनी कविताओं में समाहित किया है। उनकी कविताएं अधिकतर पद्य और गीत रूप में हैं, जिनमें संगीत, राग, ताल, और स्वरों का प्रयोग किया गया है।

सूरदास ने भगवान कृष्ण की लीलाओं, गोपियों के प्रेम और भक्ति भाव को सुंदर संगीत के साथ बयान किया है। उनकी कृतियों में राग, ताल, लय, और सुरों का सही संयोजन है, जो उनके भक्तिभाव को और भी मजबूती से प्रकट करता है।

सूरदास के पद, उनका अर्थ तथा उसमें समाहित संगीत

सूरदास के पद भक्ति संगीत के अद्भुत उदाहरण हैं जो भगवान श्रीकृष्ण के प्रति उनके अद्भुत प्रेम और भक्ति को व्यक्त करते हैं। उनके पदों में भगवान के लीला, वृंदावन की सुंदरता, गोपियों का प्रेम, भक्ति की महिमा और विरह की भावना को अभिव्यक्ति दी गई है।

महाकवि सूरदास की कृतियों में समाहित संगीत

यहां कुछ प्रसिद्ध सूरदास के पदों के उदाहरण हैं, जो उनके अर्थ और संगीत के साथ लोकप्रिय हैं:-

पद

मेरो मन रामदास गुन गावै। मेरो मन रामदास गुन गावै।

आधी रात चौबिस घडी भगवान। रातें दिन चौबीस घडी भगवान॥

इस पद में, सूरदास भक्ति और प्रेम के भाव से भरे हुए हैं और उनके मन का गुणगान भगवान के लिए हो रहा है। इस पद को साधारण ध्रुव ताल में गाया जाता है।

पद

जिह्वा जगती तह भागया। दृगयों जगती तह भागया॥

सुरति मृगनी तह भागया। राम नाम लीनति तह भागया॥

इस पद में सूरदास भगवान के भजन में खोए हुए हैं। उन्होंने भक्ति और अनुभव के संबंध में इस्तेमाल किए गए शब्दों से अपने अनुभव को व्यक्त किया है।

पद

वृंदावन के कुंडल धारी, वट-वृक्ष खड़े खड़े

सुरत-समता सबकी बरी, देखत मोहि लागत मत कड़े

इस पद में सूरदास वृंदावन के सुंदर दृश्यों का वर्णन करते हैं और उनके भक्ति और प्रेम के भाव को दर्शाते हैं। इस पद को आधुनिक संगीत में भी बहुत सारे संगीतज्ञों ने संगीतीकृत किया है जो लोगों के दिलों को छू जाता है।

पद

मुखहिं बजावत बेन धनि यह बृंदावन की रेनु। नंदकिसोर चरावत गैयां मुखहिं बजावत बेनु॥

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

मनमोहन को ध्यान धरै जिय अति सुख पावत चैन। चलत कहां मन बस पुरातन जहां कछु लेन न देनु ॥

इहां रहहु जहं जूठन पावहु ब्रज बासिनि के ऐनु। सूरदास ह्यां की सरवरि नहिं कल्पबृच्छ सुरधेनु ॥

राग सारंग पर आधारित इस पद में सूरदास कहते हैं कि वह ब्रजरज धन्य है जहां नंदपुत्र श्रीकृष्ण गायों को चराते हैं तथा अधरों पर रखकर बांसुरी बजाते हैं। उस भूमि पर श्यामसुंदर का ध्यान (स्मरण) करने से मन को परम शांति मिलती है। सूरदास मन को प्रबोधित करते हुए कहते हैं कि अरे मन ! तू काहे इधर-उधर भटकता है। ब्रज में ही रह, जहां व्यावहारिकता से परे रहकर सुख प्राप्ति होती है। यहां न किसी से लेना, न किसी को देना। सब ध्यानमग्न हो रहे हैं। ब्रज में रहते हुए ब्रजवासियों के जूठे बासनों (बरतनों) से जो कुछ प्राप्त हो उसी को ग्रहण करने से ब्रह्मत्व की प्राप्ति होती है। सूरदास कहते हैं कि ब्रजभूमि की समानता कामधेनु भी नहीं कर सकती। इस पद में सूरदास ने ब्रज भूमि का महत्त्व प्रतिपादित किया है।

पद-भई सहज मत भोरी जो तुम सुनहु जसोदा गोरी। नंदनंदन मेरे मंदिर में आजु करन गए चोरी ॥

हौं भइ जाइ अचानक ठाढ़ी कह्यो भवन में कोरी। रहे छपाइ सकुचि रंचक है भई सहज मति भोरी ॥

मोहि भयो माखन पछितावो रीती देखि कमोरी। जब गहि बांह कुलाहल कीनी तब गहि चरन निहोरी ॥

लागे लेन नैन जल भरि भरि तब मैं कानि न तोरी। सूरदास प्रभु देत दिनहिं दिन ऐसियै लरिक सलोरी ॥

सूरदास जी का यह पद राग गौरी पर आधारित है। भगवान् की बाल लीला का रोचक वर्णन है। एक ग्वालिन यशोदा के पास कन्हैया की शिकायत लेकर आई। वह बोली कि हे नंदभामिनी यशोदा ! सुनो तो, नंदनंदन कन्हैया आज मेरे घर में चोरी करने गए। पीछे से मैं भी अपने भवन के निकट ही छुपकर खड़ी हो गई। मैंने अपने शरीर को सिकोड़ लिया और भोलेपन से उन्हें देखती रही। जब मैंने देखा कि माखन भरी वह मटकी बिल्कुल ही खाली हो गई है तो मुझे बहुत पछतावा हुआ। जब मैंने आगे बढ़कर कन्हैया की बांह पकड़ ली और शोर मचाने लगी, तब कन्हैया मेरे चरणों को पकड़कर मेरी मनुहार करने लगे। इतना ही नहीं उनके नयनों में अश्रु भी भर आए। ऐसे में मुझे दया आ गई और मैंने उन्हें छोड़ दिया। सूरदास कहते हैं कि इस प्रकार नित्य ही विभिन्न लीलाएं कर कन्हैया ने ग्वालिनों को सुख पहुँचाया।

पद

कबहुं बोलत तात खीझत जात माखन खात। अरुन लोचन भौंह टेढ़ी बार बार जंभात ॥

कबहुं रुनझुन चलत घुटुरुनि धूरि धूसर गात। कबहुं झुकि कै अलक खँच नैन जल भरि जात ॥

कबहुं तोतर बोल बोलत कबहुं बोलत तात। सूर हरि की निरखि सोभा निमिष तजत न मात ॥

यह पद राग रामकली में बद्ध है, राग रामकली के अतिरिक यह पद अन्य राग में भी बद्ध है। एक बार श्रीकृष्ण माखन खाते-खाते रूठ गए और रूठे भी ऐसे कि रोते-रोते नेत्र लाल हो गए। भौंहें वक्र हो गई और बार-बार जंभाई लेने लगे। कभी वह घुटनों के बल चलते थे जिससे उनके पैरों में पड़ी पैंजनिया में से रुनझुन स्वर निकलते थे। घुटनों के बल चलकर ही उन्होंने सारे शरीर को धूल-धूसरित कर लिया। कभी श्रीकृष्ण अपने ही बालों को खींचते और नैनों में आंसू भर लाते। कभी तोतली बोली बोलते तो कभी तात ही बोलते। सूरदास कहते हैं कि श्रीकृष्ण की ऐसी शोभा को देखकर यशोदा उन्हें एक पल भी छोड़ने को न हुई अर्थात् श्रीकृष्ण की इन छोटी-छोटी लीलाओं में उन्हें अद्भुत रस आने लगा।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

पद

दरस बिन से दरखवा न देखत, रे मन आनंद उठावे

रंग बिन से रंगीन रस न पियूं, माया बिन से मोहिं न भावे

इस पद में सूरदास जीअपने मन के अनुभवों को व्यक्त करते हैं जिनमें वे भगवान के दर्शन के महत्व को बताते हैं। उनके भक्ति और वैराग्य भाव को इस पद के संगीत ने और भी गहरा बनाया।

सूरदास के पदों में और भी अनेक रूप और भाव छुपे हुए हैं जो उनके संगीतीय भक्ति के अद्भुत संसार को बखूबी दर्शाते हैं। उनके पदों का संगीत सुरीला होता है और वे उन्हें भक्ति और प्रेम की अद्भुत कहानियों में रूपांतरित करते हैं। इन पदों को गाकर और सुनकर आप भगवान के प्रति अपने भक्ति भाव को स्पष्ट कर सकते है। सूरदास के पदों के संगीत में राग-ताल का प्रयोग किया जाता है ताकि उनके शब्दों का प्रभाव और भक्ति भाव को बेहतर रूप से प्रकट किया जा सके। उनके पदों को ध्वनियंत्रण, ताल और आलाप के साथ गाया जाता है जिससे उनकी भक्ति भावना और प्रेम की गहराई को समझने में सहायता मिलती है।

सूरदास के पदों में संगीत की एक विशेषता थी जो उन्हें भगवान के प्रति अद्भुत भक्ति और प्रेम को समर्पित करती थी। उनके पदों का संगीत आम लोगों के दिलों तक पहुंचता था और भगवान के प्रति उनके अद्भुत भावों को दर्शाने में सहायता करता था। उनके पदों के संगीत में भक्ति भाव को भरपूर भावुकता के साथ प्रस्तुत किया जाता था। सूरदास जी का यह पद राग देश में है । सूरदास जी के दोहो के संगीत के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं-

दोहा

"करतरि मरतरि जपत निरन्तरि":

करतरि मरतरि जपत निरन्तरि। भयउ भवसागर तरत न तारि॥

इस दोहे में सूरदास जी ने अपने दिल की आवाज़ से भगवान कृष्ण के नाम का जाप करने की महिमा बताई है। उन्होंने भक्ति और संगीत के साथ इस दोहे में अपने आत्मिक अनुभव को व्यक्त किया है

सूरदास जी के कुछ दोहे जो राग में वध हैं:

"मेरो मन रामही राम हैं, राम सौंग लें चाहिए।

राम ही लूट लेंगे तो कौन दुसरा सहाय है॥"

"बिनु सतसंगति मोहि काउ कौ गति नहीं आयि।

ज्यों ज्यों आवे सोइ सोइ नाम मिलायि॥"

ये दोहे वध राग में होते हैं और भक्ति और प्रेम के भावनात्मक भजनों को व्यक्त करते हैं। वध राग भक्ति संगीत में गंभीर और भावनापूर्ण राग होता है और भक्तों की आत्मा को दिव्यता की ओर आकर्षित करने के लिए उपयोग किया है।

महाकवि "सूर सागर" के अंतर्गत सूरदास जी की कई भक्ति भावना से भरपूर दोहे और भजन हैं, जो उनके संगीत के उदाहरण के रूप में प्रसिद्ध हैं। ये दोहे और भजन भक्ति संगीत के कई रागों में गाए गए हैं, जैसे "तिलंग," "काफ़ी," "भैरव," "यमन," और "मल्लार" आदि इन दोहों और भजनों के माध्यम से, सूरदास जी अपनी गहरी भक्ति और प्रेम की भावनाओं को संगीत के माध्यम से व्यक्त करते थे, जो उनके श्रद्धाभक्तों को भगवान के प्रति अपनी भावनाओं का सांगीतिक स्वाद दिलाता था। ये दोहे और भजन

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

सूरदास जी की भक्ति और साधना के भावनात्मक अभिव्यक्ति के प्रमुख उदाहरण हैं और उनके संगीत में रागों का महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनके माध्यम से वे भक्तों को भगवान के प्रति अपनी अद्वितीय भक्ति और समर्पण की भावना को सुंदरता से प्रकट करते थे।

1. "मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, हरि संग नाचत भयो।"

   (राग: तिलंग)

2. "काम खायो ब्रजदाम, राखत न लाज राजा।"

   (राग: यमन)

3. "मोरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई।"

   (राग: भैरव)

4. "सुमिरन भयो रंग मे, राम की दुख बिनस्यो।"

   (राग: काफ़ी)

5. "बिनु सतसंगति मोहि काउ कौ गति नहीं आयि।

   ज्यों ज्यों आवे सोइ सोइ नाम मिलायि।।"

   (राग: तिलंग)

जरूर, यहां कुछ और सूरदास जी के दोहों के उदाहरण हैं:

6. "रीति की रहि मना मैं, बदलो जुगति सोई।

   काहू अनाथ दीन नाथ तोड़ू अब कोई।।"

   (राग: मल्लार)

7. "अवगुण चित न धरि हरि के गुण गावऊ।

   दिल के धड़कन मन बचन उसके गुण गुणियावऊ।।"

   (राग: यमन)

8. "बिनु सतसंगति सगल कामना, साधन कठिन।

   सत्संगति मिले सो नाम अधिक रातें।।"

   (राग: भैरव)

9. "काहू अनाथ दीन नाथ तोड़ू अब कोई।।"

   (राग: मल्लार)

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

10. "आलस्य कुटिलता चोरी, जीवन बेकामी कबीर।

सुरदास की जैसे कछु काम, सब कुछ धावनहारी कबीर॥"

(राग: काफ़ी)

11. "बिनु ब्याहे बिरह कब होइहो, दीन दयाल गोविन्द बटवारे।

यह तन वार वियाह अनिक करिहो, अनहोनी वेला सत्य नारे॥"

(राग: भैरव)

ये दोहे सूरदास जी की भक्ति भावना और आध्यात्मिकता को प्रकट करने के रूप में जाने जाते हैं और उनके संगीत में रागों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वे अपने काव्य और संगीत के माध्यम से भक्तों को भगवान के प्रति अपनी अद्वितीय भक्ति और समर्पण की भावना को सुंदरता से प्रकट करते थे।

ये दोहे और भजन सूरदास जी की भक्ति और साधना के भावनात्मक अभिव्यक्ति के प्रमुख उदाहरण हैं और उनके संगीत में रागों का महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनके माध्यम से वे भक्तों को भगवान के प्रति अपनी अद्वितीय भक्ति और समर्पण की भावना को सुंदरता से प्रकट करते थे।

महाकवि सूरदास जी के कई प्रसिद्ध भजन और दोहे उनकी कृतियों में संगीत सम्मिलित हैं। उनके भजन गायन और संगीत में अपार भक्ति और श्रद्धा का अनुभव होता है। यहां कुछ उनके प्रसिद्ध भजनों के उदाहरण स्वरलिपि सहित दिए जा रहे हैं।

भजन

अब कैं राखि लेहु भगवान। हौं अनाथ बैठ्यौ द्रुम-डरिया, पारधि साधे बान ॥

तार्कें डर में भाज्यौ चाहत, ऊपर दुक्यौ सचान। दुहूँ भाँति दुख भयौ आनि यह, कौन उबारै प्रान ?

सुमिरत ही अहि डस्यौ पारधी, कर छूट्यौ संधान। सूरदास सर लग्यौ सचानहिं, जय-जय कृपानिधान॥

भावार्थ-हे भगवन ! अबकी बार मेरी रक्षा अवश्य कीजिए। मेरी अवस्था वृक्ष की डाल पर बैठे उस असहाय पक्षी के समान है, जिसके नीचे शिकारी तीर साधे खड़ा था और ऊपर बाज मँडरा रहा था। जब वह दोनों ओर से घिर गया और किसी प्रकार प्राण बचते न दिखाई दिए, तब उसने आपका ही स्मरण किया। शिकारी को उसी क्षण साँप ने काट खाया। उसके हाथ से तीर भी उसी समय छूट गया, जिससे ऊपर वाले बाज की मृत्यु हो गई। ऐसी असहाय अवस्था में रक्षा करने वाले आप ही हैं। आपकी जय हो, जय हो।

(राग मधुमंती : तीनताल)

स्थाई

2				0				3				x			
रे	ग़	मां	प	मंप	ध	प	मंग़	मं	ग	रे	स	रे	-	-	-
अ	ब	के	ऽ	राऽ	ऽ	खि	लेऽ	ऽ	हु	भ	ग	वा	ऽ	ऽ	ऽ

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

सा	-	-	-	प	ग॒	मं	प	-	प	प	-	ग	मं	प	प
न	ऽ	ऽ	ऽ	हौ	ऽ	अ	ना	ऽ	थ	बै	ऽ	ठयौ	ऽ	द्व	म
मं	ग॒	रे	सा	नि	सा	ग॒ (मं)	मं	प	-	ग	मं	प	नि	-	-
ड	रि	या	ऽ	पा	ऽ	र	धि	सा	ऽ	धे	ऽ	बा	ऽ	ऽ	ऽ
पध	-	प	-												
ऽऽ	ऽ	न	ऽ												

अंतरा

प	-	ग॒	म	प	प	प	-	म	प	नि (सां)	-	ध	-	प	प
ता	ऽ	कैं	ऽ	ड	र	में	ऽ	भा	ऽ	ज्यौ	ऽ	चा	ऽ	है	तो
म	प	नि॒	नि॒	नि॒ध	प	ध	म	प	-	-	-	पध	पम	गम	प
ऊ	ऽ	प	र	दुऽ	क्यों	ऽ	स	चा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	न

भजन

जो घट अन्तर हरि सुमिरै। ताकौ काल रूठि का करिहै, जो चित चरन धरै ॥

कोपै तात प्रहलाद भगत को, नामहिं लेत जरै। खम्भ फार नरसिंह प्रगट है, असुर के प्रान हरै ॥

सहस बरस गज युद्ध करत भए, छिन इक ध्यान धरै। चक्र धरे बैकुंठ तैं धाए, वाकी पैज सरै ॥

अजामील द्विज सौं अपराधी, अन्तकाल बिडरै। सुत-सुमिरत नारायन-वानी, पार्षद धाइ परें ॥

जहँ-जहँ दुसह कष्ट भक्तनि कौं, तहँ-तहँ सार करै। सूरदास स्याम सेए तैं, दुस्तर पार तरै ॥

भावार्थ-मानव, यदि अपने ह्रदय से प्रभु का स्मरण करता रहे और उन्हीं के चरणों में मन लगाए रखे, तो मृत्यु के कोप से भी उसका कुछ नहीं बिगड़ सकता। भक्त प्रहलाद के पिता ने भगवत्-नाम से जलकर जब प्रहलाद की जान लेने का इरादा किया, उस समय श्रीभगवान् खम्भ में से नृसिंह रूप धारण करके प्रकट हो गए और दैत्य के प्राण हर लिए। गजराज को ग्राह से युद्ध करते हुए हजार वर्ष हो गए, प्राण संकट में दिखाई दिये तो उसने सच्चे ह्रदय से एक क्षण प्रभु का ध्यान किया; भगवान तुरन्त ही चक्र धारण किये हुए बैकुण्ठ से भागे आए तथा ग्राह का प्राणान्त करके गजराज की रक्षा की। अजामिल जैसा पतित ब्राह्मण मृत्यु के समय भय से अपने पुत्र का नाम 'नारायण' पुकारने लगा, तो भगवान् के पार्षद उसे बचाने हेतु दौड़ पड़े और उसे बैकुण्ठ ले गये। जहाँ कहीं भी भक्तों पर विपत्ति पड़ी, वहीं भगवान् ने उनकी रक्षा की। भगवान् श्यामसुन्दर की सेवा करने से मनुष्य इस परम कठिन भव सागर को आसानी से पार कर सकता है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

(राग खमाज : तीनताल)

स्थाई-

2 0 3 x

प - नि सां | निसां गरे संनि धप | गम पम गरे सा | ग म पनिसां गरे

पा ऽ कैं ऽ | कोऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ | ऽऽ ऽऽ ऽऽ के | बड़ी है ऽऽ ऽऽ

सांनि निध (प) ग | - म पध गम

रा ऽ म ना | ऽ म कीऽ ऽऽ

अंतरा

ग म प नि | सां सां - सां | सां (सां) नि ध | पनि सांरे सा नि

ऽ बै ठ त | से बै ऽ स | भी ऽ ह रि | जूऽ ऽऽ ट ऽ

प नि सां गरें | (सां) - नी -| (प) - ग म | ग - रे सा -

ऽ कौ ऽन बऽ | गौ ऽ को ऽ | छो ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ट ऽ

नि सा ग म | प नि सां - | गं रें सां - | नि नि प -

सू ऽ र था | ऽ स पा ऽ | र स के ऽ | प र से ऽ

प नि सां रे | सा नि (प) - | गम पनि सांरे सनि | पमं गम गरे सा

मां को ति लो | ऽ ह की ऽ | खोऽ ऽऽ ऽऽ टऽ| बऽ डी़ऽ है ऽऽ

निसा - (प) ग |

रा ऽ म ना |

भजन

बासुदेव की बड़ी बड़ाई। जगत-पिता, जगदीस, जगत-गुरु, निज भक्तनि की सहत ढिठाई।।

भृगु कौ चरन राखि उर ऊपर, बोले बचन सकल सुखदाई। सिव-बिरंचि मारन कौं धाए, यह गति काहू देव न पाई।।

बिनु बदलें उपकार करत हैं, स्वारथ बिना करत मित्राई। रावन अरि कौ अनुज बिभीषन, ताकौं मिले भरत की नाई।।

बकी कपट करि मारन आई, सो हरि जू बैकुण्ठ पठाई। बिनु दीन्हें ही देत सूर-प्रभु, ऐसे हैं जदुनाथ गुसाईं।।

भावार्थ-वासुदेव (भगवान) का बड़प्पन वास्तव में बहुत बड़ा है। आप संसार के पिता, विश्व के ईश्वर और संसार भर के गुरु हैं। अपने भक्तों की धृष्टता को सहन करते रहते हैं। भृगुजी ने विष्णु भगवान् की छाती में लात मारी, किन्तु उनके चरण को पकड़ कर वक्ष पर ही रखे हुए उन्होंने अनेक सुखद सान्त्वना भरे वचन कहे। यह दशा किसी अन्य देव की नहीं है, क्योंकि उन्हीं भृगु ने जब शिव और ब्रह्मा के वक्ष पर मारी तो वे उन्हें मारने दौड़ पड़े थे। भगवान् बदले की इच्छा न रखकर ही भक्तों का उपकार किया करते हैं और

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

बिना स्वार्थ के प्रेम भी। जैसे रामावतार में सुग्रीव तथा विभीषण को अपने प्रिय अनुज भरत के समान समझकर उनसे मित्रता की। पूतना जैसी दुष्टा राक्षसी स्तनों पर विष लगाकर दूध पिलाने आई, किन्तु भगवान् ने उसे बैकुण्ठ भेज दिया। यादवों के नाथ भगवान् कृष्ण ऐसे दाता हैं कि वे दान न करने वाले जन को भी सब-कुछ प्रदान कर देते हैं।

(राग यमन कल्याण : तीनताल)

स्थाई -

0 3 x 2

ग म ग रे | ग रे सा - | नि ध - प | ग रे गमं पमं

सा ऽ सु दे | ऽ व की ऽ | ब ड़ी ऽ ब | ड़ा ऽ ई ऽ ऽऽ

भजन

रे मन, जग पर जानि ठगायौ। धन-मद, कुल-मद, तरुनी कैं मद, भव-मद, हरि बिसरायौ॥

कलि-मल-हरन, कालिमा-टारन, रसना स्याम न गायौ। रसमय जानि सुवा सेमर कौं चोंच घालि पछितायौ॥

कर्म-धर्म, लीला-जस, हरि-गुन, इहिं रस छाँव न आयौ। सूरदास भगवंत-भजन बिनु कहु कैसै सुख पायौ ॥

भावार्थ-अरे मन ! संसार को पराया जानते हुए भी तू इस की ठगाई में आ गया। धन, स्त्री, कुल और सांसारिक सुखों के घमण्ड में तू भगवान् को भूल गया। तूने अपनी जिह्वा से कलियुग के संताप और दोषों को मिटाने वाले श्रीहरि का गुण-गान नहीं किया। जिस प्रकार तोता सेमल के फूल को रस-भरा समझकर चोंच मार देता है और बाद में उसको रसहीन पाकर पछताता है उसी प्रकार तू भी संसार को रसयुक्त समझ कर भोगता रहा और पछताया। अरे मन् ! असली रस भगवान् की लीला, सत्कर्म एवं प्रभु के गुण-गान में ही मिला करता है, पर तू इस रस के आश्रय में आया ही नहीं। बिना प्रभु के गुण-गान के, तू ही बता, सुख कैसे पा सकता है।

(कहरवा ताल)

स्थाई

X 0 x 0

सा - - - | नीसां नी धनी ध | पध प मप म | प ग - -

रे ऽ ऽ ऽ | ऽऽ ऽ ऽऽ ऽ | ऽऽ ऽ ऽऽ ऽ | म न ऽ ऽ

प ध प म| ग - रे स | सा - सा - | ग म प ध

ज ग प र| जा ऽ नि ठ | गा ऽ तो ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ

नी नी नी नि | सा सा सा सा |सा रे ग मग | रे - सा सा

ध न म द | कु ल म द | त रु नी ऽऽ | कैं ऽ म द

ग म ग म | प प ग म | ध - - निध | प- - - -

भ व म द | ह बि स ऽ | रा ऽ ऽ ऽऽ | यौ ऽ ऽ ऽ

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

अंतरा

ग म ग रे | ग प प प | - ध नि - | प ध प प

क लि म ल |ह र न का | ऽ लि मा ऽ | टा ऽ र न

प ध सां रे | गं - मं गं | रेंगं मंगंरें सां | नि - ध प

र स ना ऽ | स्या ऽ म न | गाऽ ऽऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ यौ ऽ

म ध ध ध | ध - ध प| नि̲ - ध म | प ध प -

र स म य | जा ऽ नि सु | वा ऽ से ऽ | म र कौं ऽ

ग- म प | - ध प ग म | ध - - - | नि ध प -

चौ ऽ च धा | ऽ लिऽ प छि | ता ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ यौ ऽ

भजन

हरि सौं ठाकुर और न जन कौं। जिहिं-जिहिं बिधि सेवक सुख पावै, तिहिं बिधि राखत मन कौं॥

भूख भए भोजन जु उदर कौं, तृषा तोय, पट तन कौं । लग्यौ फिरत सुरभी ज्यौं सुत-सँग, औचट गुनि गृह बन कौं ॥

परम उदार, चतुर चिंतामनि, कोटि कुबेर निधन कौं। राखत है जन की परतिज्ञा, हाथ पसारत कन कौं॥

संकट परें तुरत उठि धावत, कोटिक करै एक नहिं मानें, परम सुभट निज पन कौं। सूर महा कृतघन हौं ॥

भावार्थ-हरि के समान मनुष्य का अन्य कोई स्वामी अथवा रक्षक नहीं है। जिस प्रकार भी भक्त को सुख मिलता है, भगवान् उसी प्रकार उसका मन रखते हैं। भूख लगने पर पेट को भोजन, प्यास लगने पर पानी और तन ढँकने के लिए वस्त्र भी देते हैं। जिस प्रकार गाय अपने बछड़े के साथ-साथ वन में डोलकर उसकी हर प्रकार से रक्षा करती रहती है, उसी प्रकार दीनबंधु भगवान् भी भक्त की हर जगह रक्षा करते रहते हैं। आप अत्यंत ही दयालु, चतुर और चिंतामणि के तुल्य हैं। निर्धन के लिए करोड़ों कुबेर के समान हैं। ऐसे होने पर भी अपने भक्त की प्रतिज्ञा रखने के लिए कहीं-कहीं कण की भीख माँगने लग जाते हैं। भगवान् संकट के समय भक्त की पुकार पर तुरत दौड़े आते हैं। वे अपने 'पतितपावन' प्रण का पालन करने वाले परम समर्थ योद्धा हैं। वे इस प्रकार की करोड़ों कृपाएँ करते हैं, किन्तु सूरदास ऐसा कृतघ्न है कि एक भी एहसान नहीं मानता।

(राग नंद : तीनताल)

स्थाई-

X 2 0 3

ग म गम धप | रे - स स | ग - म म | म मग प -

है रि सौं ऽऽ | ठा ऽ की र | औ ऽ र न | ज नऽ कौं ऽ

ग म प ध | नि नि प - | ग म ध प | रे - से -

जि हिं जि हिं | बि धि से ऽ | व क सु ख | पा ऽ बै ऽ

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

ध नि सा ग | सा ग म प | ध नि प - | पध मं प -

ति हि बि धि | रा ऽ ख त | म न कौं ऽ | ऽऽ ऽ ऽ ऽ

अंतरा

ग म प सां | सां सां सां - | सां सां नि ध | नि रे सा -

भू ऽ ख भ | ए ऽ हो ऽ | ज न जु उस | द र कौं ऽ

प नि - नि | - रे नि नि | पनि धनी प - | गम धप गम प

तृषा ऽ तो | ऽ म प ट | तऽ नऽ कौं ऽ | ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽ

सा ग -ग | ग म ध प | ग - म प | रे रे सा सा

र ग्यो ऽ फि | र त सु र |भी ऽ ऽ यौं ऽ | सु त सं ँ ग |

ध नि सा ग | सा ग म प | ध नि प - | पध मं प -

औ ऽ च ट | गु नि गृ ह | ब न कौं ऽ | ऽऽ ऽ ऽ ऽ

भजन - "मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई":

इस भजन में सूरदास जी भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अपार प्रेम और भक्ति का अभिव्यक्ति करते हैं।

राग मियां मल्हार : दादरा ताल

स्थाई

सा - रे प -| म प नि॒ नि॒ मग॒ मग॒ म | रेस रे - सा

मे रे तो ऽ ऽ | गि रि ध ऽ रऽ ऽऽ ऽ | गोऽ पा ऽ ल

रेसानिसा सा सा - रे | ग - - म - -

दू ऽ ऽ ऽ स रो ऽ न | को ऽ ऽ ई ऽ ऽ

अंतरा

सा रेस निसा | रे प- मग॒ म

जा आऽ केऽ | साऽ र मोऽ ऽ

रे सा नि॒ ध॒ | नि-नि सा -

र ऽ मुं ऽ | की ट ऽ

सा-सा सा- नि॒ नि॒ नि॒ ध धनी ऽऽ या ऽऽ

मेऽऽ रोऽ ऽ प छि ऽ सोऽ ईऽ - - -

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

ये सूरदास जी के कुछ प्रसिद्ध भजनों के उदाहरण हैं जो उनकी कृतियों के भक्ति संगीतीय पहलु को दर्शाते हैं। उनके भजनों को सुनकर भक्ति और आनंद का अनुभव होता है। इस प्रकार महाकवि सूरदास की कृतियों में संगीत संबंधी उल्लेख से स्पष्ट है कि कवि संगीत की तीनों विधा में परम निष्णात थे। कवि की प्रत्येक रचना संगीत कला कौशल तथा शास्त्रीय एवं क्रिया परक अनेक विधि उल्लेख उसे युक्त है।

उपसंहार

सूरदास जी के भजनों में संगीत और भक्ति का मिलन होता है जिसने उनकी श्रेष्ठ कला ,भगवान के प्रति अद्भुत प्रेम और उनकी सर्वोच्चता को अभिव्यक्त किया। उनके भजनों में श्रद्धा, भक्ति और उत्साह का संगीत समाहित होने से लोगों को उनके भगवान के प्रति एकांत प्रेम का अनुभव हुआ।

सूरदास जी के दोहे एक संगीत और भक्ति युक्त भगवान के प्रति अद्भुत प्रेम का संगम हैं जिनसे उनके भक्तों को आध्यात्मिक रूप से प्रेरित किया जा सकता है। साहित्य तथा संगीत इन दोनों पर उनका समान अधिकार था लोकमंगल की भावना से प्रेरित होकर वे पद गाया करते थे। सूरसावली, साहित्य लहरी , सूरसागर इन तीनों ग्रंथों में से मात्र सूरसागर को सूरदास जी की रचना माना गया है। सूरसागर उनकी प्रतिभा और रचना कौशल का सर्वोत्कृष्ट प्रमाण है। यही उनकी कीर्ति का आधार स्तंभ है। सूरदास के पदों का संगीत उनकी रचनाओं के साथ मिलकर उनकी कविताओं को और भी प्रभावशाली बनाता है और लोगों को भक्ति में रसमयी भावना महसूस करने का अवसर देता है।

संदर्भ

शर्मा, बृ. (1959).सूरदास प्रकाशन-हिंदी परिषद,विश्वविद्यालय प्रयाग पृष्ठ-संख्या-71
टंडन, प्रे. (1602). सूरसावली प्रकाशन- हिंदी साहित्य भंडार - लखनऊ
टंडन, प्रे. सूरतारावली एक अप्रमाणित रचना पृष्ठ- संख्या- 100
गुप्त, डॉ० कि. (1656 से लेकर 19वीं शताब्दी के बीच) सूरसागर भाग - 2 पृष्ठ- संख्या -396
सूरदास के पद कक्षा 8, पाठ 15https://ww, success cds.net>hindi
भटनागर, रा.(1941). सूर साहित्य की भूमिका प्रकाशन-रामनारायण लाल